सावन पूर्णिमा 27 या 28 अगस्त? जानें सही डेट और रक्षाबंधन मुहूर्त

विषय सूची (Table of Contents):

>> सावन पूर्णिमा 2026 27 या 28 अगस्त, जानें तिथि की शुरुआत और समाप्ति का समय...
>> पंचांग के अनुसार तिथि की समय सारणी (Timings)...
>> सावन पूर्णिमा व्रत कब रखें? चंद्रोदय समय और अर्घ्य देने के नियम...
>> चंद्रोदय (Moonrise) का समय और अर्घ्य विधि...
>> पूर्णिमा स्नान और दान का शुभ मुहूर्त 28 अगस्त को चौघड़िया अनुसार समय...
>> 28 अगस्त 2026 शुभ चौघड़िया मुहूर्त सूची (List)...
>> सावन पूर्णिमा पर किन वस्तुओं का दान करें?...
>> सावन पूर्णिमा सरल पूजन विधि श्रीहरि विष्णु और माता लक्ष्मी की आराधना...
>> प्रातः कालीन पूजन के चरण...
>> रक्षाबंधन 2026 कब मनाएं? 27 अगस्त को भद्रा काल का प्रभाव...
>> 27 अगस्त को भद्रा का साया...
>> 28 अगस्त को राखी बांधना सर्वोत्तम...
>> 28 अगस्त को लगने वाला चंद्र ग्रहण क्या भारत में मान्य होगा सूतक काल?...
>> भारत में दृश्यता और सूतक नियम...
>> सावन पूर्णिमा व्रत और स्नान-दान का धार्मिक महत्व...
>> निष्कर्ष (Conclusion)...
>> जनता के सवाल (FAQs)...

Sawan Purnima Vrat 2026 Date, Time Muhurat:हिंदू धर्म में सावन माह की पूर्णिमा तिथि का विशेष धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व माना गया है। इस पावन तिथि पर भगवान सत्यनारायण, माता लक्ष्मी और चंद्र देव की उपासना की जाती है। इसके साथ ही भाई-बहन के अटूट स्नेह का पर्वरक्षाबंधनभी इसी दिन मनाया जाता है।

साल 2026 में सावन पूर्णिमा की सही तारीख, व्रत के दिन, स्नान-दान के शुभ मुहूर्त और रक्षाबंधन के समय को लेकर श्रद्धालुओं के बीच काफी असमंजस की स्थिति बन गई है। यह संशय पूर्णिमा तिथि के समय,भद्रा कालके साए और वर्ष के दूसरेचंद्र ग्रहणके संयोग के कारण उत्पन्न हुआ है।

यदि आप भी इस बात को लेकर उलझन में हैं कि सावन पूर्णिमा का व्रत 27 अगस्त को रखा जाए या 28 अगस्त को, तो यहां आपको पंचांग गणना, शुभ चौघड़िया मुहूर्त, चंद्रोदय समय और पूजा विधि की पूरी प्रामाणिक जानकारी विस्तार से मिलेगी।

सावन पूर्णिमा 2026: 27 या 28 अगस्त, जानें तिथि की शुरुआत और

वैदिक पंचांग के अनुसार, सावन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि की शुरुआत27 अगस्त 2026 को सुबह 09 बजकर 09 मिनटपर हो रही है। इस तिथि का समापन अगले दिन यानी28 अगस्त 2026 को सुबह 09 बजकर 49 मिनटपर होगा।

पंचांग के अनुसार तिथि की समय सारिणी (Timings)

>> पूर्णिमा तिथि प्रारंभ:27 अगस्त 2026, गुरुवार - प्रातः 09:09 बजे से

>> पूर्णिमा तिथि समाप्त:28 अगस्त 2026, शुक्रवार - प्रातः 09:49 बजे तक

>> व्रत की तारीख:27 अगस्त 2026 (प्रदोष काल एवं चंद्र व्यापिनी पूर्णिमा)

>> स्नान-दान की तारीख:28 अगस्त 2026 (उदयातिथि पूर्णिमा)

धार्मिक मान्यताओं और पंचांग नियमों के अनुसार, जब पूर्णिमा तिथि दो दिनों तक व्याप्त हो, तो व्रती और गृहस्थ दोनों को अलग-अलग परंपराओं का पालन करना होता है। रात में चंद्रमा की पूजा करने वाले 27 अगस्त को व्रत रखेंगे, जबकि पवित्र नदियों में स्नान और दान करने वाले 28 अगस्त की सुबह को प्राथमिकता देंगे।

सावन पूर्णिमा व्रत कब रखें? चंद्रोदय समय और अर्घ्य देने के न

शास्त्रों के अनुसार, पूर्णिमा का उपवास उस दिन रखा जाता है जिस दिन रात के समय पूर्ण चंद्रमा अपनी सभी 16 कलाओं के साथ उपस्थित रहता है। 27 अगस्त को पूर्णिमा तिथि पूरे दिन और रात भर रहेगी, इसलिएसावन पूर्णिमा का व्रत 27 अगस्त 2026को ही रखा जाएगा।

चंद्रोदय (Moonrise) का समय और अर्घ्य विधि

27 अगस्त 2026 को सावन पूर्णिमा के दिन चंद्रोदय का अनुमानित समयशाम 06 बजकर 34 मिनटरहेगा। अलग-अलग शहरों और राज्यों के भौगोलिक अंतर के अनुसार चंद्रोदय के समय में कुछ मिनटों का बदलाव हो सकता है।

>> चांदी के पात्र का प्रयोग:चंद्रमा को अर्घ्य देने के लिए शुद्ध जल में कच्चा गाय का दूध, सफेद चंदन, अक्षत और सफेद फूल मिलाएं।

>> मंत्र जाप:अर्घ्य देते समय ॐ सों सोमाय नमः अथवा ॐ चंद्रमसे नमः मंत्र का 11 या 21 बार जप करें।

>> दृष्टि और संकल्प:चंद्रमा की किरणों को देखते हुए अर्घ्य समर्पित करें और मन की शांति व आरोग्य की कामना करें।

चंद्रमा को विधिपूर्वक अर्घ्य अर्पित करने के बाद ही व्रती अपने व्रत का पारण (उपवास खोलना) कर सकते हैं।

यह भी पढ़ें (Latest Updates):देश और दुनिया के सामरिक घटनाक्रमों के बारे में जानें:दुश्मनों का काल! भारत ला रहा है अदृश्य ध्वनि मिसाइल 2026

पूर्णिमा स्नान और दान का शुभ मुहूर्त: 28 अगस्त को चौघड़िया अ

सनातन धर्म में उदयातिथि का विशेष महत्व है। 28 अगस्त 2026 को सूर्योदय के समय पूर्णिमा तिथि विद्यमान रहेगी, जो सुबह 09:49 बजे तक चलेगी। इसलिए गंगा, यमुना या किसी भी पवित्र नदी में स्नान और दान-पुण्य का कार्य 28 अगस्तको सुबह करना सर्वश्रेष्ठ फलदायी होगा।

28 अगस्त 2026: शुभ चौघड़िया मुहूर्त सूची (List)

>> चल चौघड़िया (सामान्य शुभ):सुबह 05:57 बजे से सुबह 07:33 बजे तक

>> लाभ चौघड़िया (अत्यंत शुभ):सुबह 07:33 बजे से सुबह 09:10 बजे तक

>> अमृत चौघड़िया (सर्वश्रेष्ठ):सुबह 09:10 बजे से पूर्णिमा समाप्ति (सुबह 09:49 बजे) तक

सावन पूर्णिमा पर किन वस्तुओं का दान करें?

पूर्णिमा के दिन चंद्र दोष दूर करने और माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए सफेद वस्तुओं का दान करना बेहद शुभ माना गया है। इस दिन जरूरतमंदों और ब्राह्मणों को निम्नलिखित सामग्री दान करनी चाहिए:

>> चावल, दूध, दही, सफेद वस्त्र और मिश्री

>> चांदी के सिक्के या आभूषण

>> धार्मिक पुस्तकें, फल और यथाशक्ति दक्षिणा

सावन पूर्णिमा सरल पूजन विधि: श्रीहरि विष्णु और माता लक्ष्मी

सावन पूर्णिमा के दिन भगवान श्रीहरि विष्णु और धन की देवी माता लक्ष्मी की विधि-विधान से पूजा करने पर घर में सुख, शांति और समृद्धि का वास होता है।

प्रातः कालीन पूजन के चरण

>> शुद्धि एवं संकल्प:ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नानादि से निवृत्त हों और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। सूर्य देव को तांबे के लोटे से जल अर्पित करें और व्रत का संकल्प लें।

>> वेदी की स्थापना:पूजा घर की उत्तर-पूर्व दिशा में एक चौकी पर लाल या पीला कपड़ा बिछाएं और भगवान विष्णु व माता लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित करें।

>> दीप एवं तिलक:शुद्ध गाय के घी का दीपक और धूपबत्ती प्रज्वलित करें। भगवान को पीले चंदन का तिलक लगाएं और माता लक्ष्मी को कुमकुम अर्पित करें।

>> भोग और तुलसी दल:पंचामृत, मौसमी फल और पंजीरी का भोग लगाएं। ध्यान रहे कि भगवान विष्णु के भोग में तुलसी पत्र अवश्य शामिल हो।

>> सत्यनारायण कथा:इस दिन श्री सत्यनारायण भगवान की व्रत कथा का पाठ करना या सुनना अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है।

>> आरती और प्रार्थना:पूजा के अंत में भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की आरती गाएं और परिवार के कल्याण की प्रार्थना करें।

विदेश नीति एवं कूटनीति समाचार:अंतरराष्ट्रीय राजनीति के बड़े विश्लेषण को पढ़ें:ट्रंप की चाल: भारत को तेल और पाकिस्तान द्वीप प्लान का सच!

रक्षाबंधन 2026 कब मनाएं? 27 अगस्त को भद्रा काल का प्रभाव

सावन पूर्णिमा के दिन ही रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता है, लेकिन शास्त्रों का स्पष्ट नियम है कि भद्रा काल में रक्षासूत्र (राखी) नहीं बांधना चाहिए। भद्रा काल को अशुभ माना जाता है और इस दौरान किया गया मांगलिक कार्य फलित नहीं होता।

27 अगस्त को भद्रा का साया

27 अगस्त 2026 को पूर्णिमा तिथि की शुरुआत (सुबह 09:09 बजे) के साथ ही भद्रा भी लग रही है, जो पूरे दिन और देर रात तक प्रभावी रहेगी। शास्त्रों के अनुसार भद्रा में राखी बांधने से भाई पर संकट आने की मान्यता है।

28 अगस्त को राखी बांधना सर्वोत्तम

ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, 28 अगस्त 2026 की सुबह भद्रा का कोई प्रभाव नहीं रहेगा। साथ ही सुबह 09:49 बजे तक पूर्णिमा की उदयातिथि रहेगी। अतः बहनें28 अगस्त को प्रातः काल शुभ चौघड़िया मुहूर्तमें अपने भाइयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांध सकती हैं।

28 अगस्त को लगने वाला चंद्र ग्रहण: क्या भारत में मान्य होगा

खगोलीय और ज्योतिषीय गणना के अनुसार, 28 अगस्त 2026 की सुबह साल का दूसरा चंद्र ग्रहण लगने जा रहा है। इस खबर के बाद लोगों के मन में यह डर था कि क्या ग्रहण के कारण रक्षाबंधन और पूजा-पाठ पर रोक लग जाएगी।

भारत में दृश्यता और सूतक नियम

>> दृश्यता (Visibility):यह चंद्र ग्रहण भारत में दृश्यमान (दिखाई देने योग्य) नहीं होगा। यह पश्चिमी देशों और अन्य महाद्वीपों में दिखाई देगा।

>> सूतक काल (Sutak Period):ज्योतिष शास्त्र का नियम है कि जो ग्रहण जहां दिखाई नहीं देता, वहां उसका सूतक काल और धार्मिक प्रभाव मान्य नहीं होता।

>> पूजा-पाठ पर प्रभाव:चूंकि भारत में सूतक नहीं लगेगा, इसलिए स्नान-दान, मंदिर प्रवेश, पूजन और रक्षाबंधन के त्योहार पर इसका कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

सीमा सुरक्षा एवं कूटनीतिक रुख:भारत-चीन सीमा विवाद पर विदेश मंत्रालय का आधिकारिक बयान देखें:चीन पर भारत का कड़ा प्रहार: J K और लद्दाख पर MEA की दोटूक

सावन पूर्णिमा व्रत और स्नान-दान का धार्मिक महत्व

सावन मास का समापन पूर्णिमा तिथि के साथ ही होता है। भगवान शिव के प्रिय महीने के अंतिम दिन पड़ने वाली यह पूर्णिमा आत्मिक शुद्धि, पाप निवारण और मनोकामना पूर्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी गई है।

>> कुंडली में चंद्र दोष से मुक्ति:जिनकी कुंडली में चंद्रमा कमजोर या नीच स्थिति में होता है, उन्हें सावन पूर्णिमा पर भगवान शिव और चंद्र देव की उपासना से मानसिक तनाव और रोगों से राहत मिलती है।

>> अक्षय पुण्य की प्राप्ति:पद्म पुराण के अनुसार, सावन पूर्णिमा पर पवित्र सरोवर या तीर्थ स्थल में स्नान करने और असहायों को अन्न दान करने से अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य प्राप्त होता है।

>> माता लक्ष्मी का आशीर्वाद:पूर्णिमा की रात्रि में कनकधारा स्तोत्र या श्री सूक्त का पाठ करने से जीवन से दरिद्रता दूर

होती है और आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

संक्षेप में, सावन पूर्णिमा 2026 की तिथि और मुहूर्त को लेकर कोई भ्रम रखने की आवश्यकता नहीं है। जो श्रद्धालुपूर्णिमा व्रतरखना चाहते हैं और रात में चंद्रमा को अर्घ्य देना चाहते हैं, वे27 अगस्त 2026को उपवास रखें।

वहीं दूसरी ओर,स्नान-दान, धार्मिक अनुष्ठान और रक्षाबंधन का पावन पर्व 28 अगस्त 2026की सुबह शुभ चौघड़िया मुहूर्त में मनाना शास्त्र सम्मत और मंगलकारी रहेगा। 28 अगस्त का चंद्र ग्रहण भारत में प्रभावी न होने के कारण सभी धार्मिक कार्य निर्विघ्न संपन्न किए जा सकते हैं।

जनता के सवाल (FAQs)

पूर्णिमा तिथि 27 अगस्त 2026 को सुबह 09:09 बजे से शुरू होकर 28 अगस्त 2026 को सुबह 09:49 बजे तक रहेगी। व्रत 27 अगस्त को और स्नान-दान व रक्षाबंधन 28 अगस्त को मनाया जाएगा।

पूर्णिमा व्रत के लिए रात में चंद्रमा का उपस्थिति होना अनिवार्य है। 27 अगस्त की रात को पूर्णिमा तिथि और चंद्र दर्शन का संयोग मिल रहा है, इसलिए व्रत 27 अगस्त को ही मान्य है।

27 अगस्त को शाम लगभग 06 बजकर 34 मिनट पर चंद्रोदय होगा। इसके बाद व्रती चंद्रमा को जल व कच्चे दूध से अर्घ्य देकर व्रत खोल सकते हैं।

28 अगस्त को स्नान-दान सुबह 09:49 बजे से पहले करना होगा। इसमें चल चौघड़िया सुबह 05:57 से 07:33 बजे तक और लाभ चौघड़िया सुबह 07:33 से 09:10 बजे तक सर्वोत्तम रहेगा।

27 अगस्त को पूर्णिमा तिथि के साथ ही पूरे दिन भद्रा काल प्रभावी रहेगा। शास्त्रों में भद्रा के समय राखी बांधना पूर्णतः वर्जित माना गया है।

नहीं, यह चंद्र ग्रहण भारत में दृश्यमान नहीं होगा। इसलिए भारत में इसका सूतक काल मान्य नहीं होगा और सामान्य रूप से सभी धार्मिक अनुष्ठान किए जा सकेंगे।

सावन पूर्णिमा पर मुख्य रूप से भगवान श्रीहरि विष्णु, माता लक्ष्मी, भगवान शिव और चंद्र देव की पूजा का विधान है।

कच्चे दूध और जल से चंद्रमा को अर्घ्य देने से कुंडली का चंद्र दोष शांत होता है, मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती है और जीवन में सुख-शांति आती है।

इस दिन चावल, सफेद वस्त्र, दूध, चीनी, चांदी, फल और दक्षिणा का दान करना अत्यंत शुभ और अक्षय फल देने वाला माना

जाता है।

28 अगस्त 2026 की सुबह भद्रा का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। सुबह 05:57 बजे से 09:49 बजे के बीच उदयातिथि पूर्णिमा में राखी बांधना सबसे उत्तम और मंगलकारी रहेगा।